कान्फ्रेंस कॉल से पर्यावरण अध्ययन

अनिल कुमार पटेल

हमारे स्कूल के शिक्षकों ने योजना बनाई कि प्रत्येक शिक्षक अपनी रुचि का कोई एक विषय लेगा और किसी एक कक्षा के पन्द्रह बच्चों को कान्फ्रेंस कॉल के माध्यम से पढ़ाएगा। हालाँकि मैं शारीरिक शिक्षा और खेल विषय का शिक्षक हूँ, लेकिन पर्यावरण अध्ययन में रुचि होने के कारण मैंने एक माह तक इसे पढ़ाने की ज़िम्मेदारी ली। मुझे कक्षा चौथी के पन्द्रह बच्चे मिले। एक सप्ताह बाद मुझे कक्षा के पूरे तीस बच्चों के साथ जुड़ने का मौक़ा मिला।

एक-दो दिन तो यह सोचने में निकल गए कि कान्फ्रेंस कॉल में पढ़ाई करना कैसे सम्भव होगा। कुछ इस तरह के सवाल दिमाग़ में आते रहे :

- क्या सभी बच्चों के घर में मोबाइल फ़ोन होगा?
- नेटवर्क की समस्या तो नहीं आएगी?
- क्या बच्चे समय पर कॉल रिसीव कर पाएँगे?
- मौसम ख़राब रहा तो?
- दोनों तरफ़ से आवाज़ स्पष्ट सुनाई देगी?
- कॉल लग जाए तो क्या बच्चे और उनके अभिभावक घर में मिलेंगे?
- क्या अभिभावक और बच्चे कान्फ्रेंस कॉल में पढ़ने-लिखने, सीखने-समझने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए तैयार होंगे?
- क्या बच्चे विषय को समझ पाएँगे?
- उन्हें पाठ की विषयवस्तु समझ आ पाएगी?
- क्या बच्चों की रुचि होगी? क्या वे कॉल में सहज महसूस करेंगे?
- क्या हम यह प्रक्रिया नियमित रूप से जारी रख पाएँगे?

मुझे लगा कि इन सभी सवालों के जवाब पाने के लिए पहले शुरुआत करना ज़रूरी है। मैंने शुरुआत की। पहले दिन कुछ इस तरह की बातचीत हुई — घर में समय कैसे बीत रहा है, मनोरंजन के लिए क्या करते हैं, घर की परिस्थिति कैसी है। इसके अलावा जीविकोपार्जन के साधन और घर के सभी लोगों के स्वास्थ्य के बारे में भी बातचीत की गई। हालाँकि बाद में भी प्रत्येक कॉल में इन सबके बारे में कुछ न कुछ बातें अवश्य होती रहीं, लेकिन इस तरह शुरुआत करने से अभिभावकों-बच्चों और शिक्षकों के बीच सहज वातावरण का निर्माण हुआ।

पहले तीन दिन कक्षा चौथी, पर्यावरण अध्ययन के पाठ-1 'रिश्ते-नाते' को पढ़ने, समझने और लिखने का काम किया। जब इस कविता को पढ़ाया जा रहा था, तब कान्फ्रेंस कॉल में उपस्थित सभी बच्चे और अभिभावक मिलकर इसे दोहरा रहे थे। साथ ही आस-पास के बच्चों की आवाज़ें भी आ रही थीं। यह सब पढ़ाई को और मज़ेदार बना रहा था। चर्चा के दौरान बच्चों और अभिभावकों का प्रसन्नता से बात करना अभिभावक-विद्यार्थी और शिक्षक के बीच अच्छे सम्बन्ध को दर्शाता है। बच्चों ने और मैंने कविता के अर्थ पर चर्चा की और इस बातचीत को आगे भी जारी रखा।

बच्चों को पर्यावरण अध्ययन की पुस्तक की पीडीएफ फाइल पहले ही भेज दी गई थी। उन्होंने पाठ के अन्त में दिए गए अभ्यास प्रश्नों को हल करने के लिए इसका उपयोग किया। बच्चों ने अपने जवाब कॉपी में लिखे और इस बात की पुष्टि उनके अभिभावकों ने की। बच्चों ने कान्फ्रेंस कॉल में ही बारी-बारी से दादी-नानी की कहानियाँ भी सुनाईं। उन्होंने 'अकती तिहार' के बारे में भी बताया, जो एक छत्तीसगढ़ी त्यौहार है। इसे मनाने के बाद किसान मानसून के मौसम के लिए अपने खेत जोतना शुरू करते हैं। इस प्रकार बच्चों और अभिभावकों ने इस पाठ के ज़रिए अपने रिश्तेदारों की यादें ताज़ा कीं।

बच्चों को पाठ्यपुस्तक की कविता 'दाँत' पढ़ने का होमवर्क दिया गया था। उनसे कहा गया था कि वे कविता पढ़कर प्रत्येक पंक्ति के अर्थ को अपने दैनिक जीवन के अलग-अलग उदाहरणों के माध्यम से समझने की कोशिश करें। कॉल में पाठ के प्रश्नों को प्रत्येक बच्चे से बारी-बारी से पूछा गया और उनके उत्तर लिखकर मुझे भेजने के लिए कहा गया। बहुत सारे बच्चों ने उत्तर भेजे। अधिकांश अभिभावकों ने अपने बच्चों द्वारा उत्तर लिखने की पुष्टि की। कुछ बच्चों ने बाद में उत्तर भेजने का वादा किया और भेजे भी।

आरम्भ में कक्षा चौथी के सभी बच्चों को पढ़ाना मेरी पाठ-योजनाओं में शामिल नहीं था। बाद में मैंने उन बच्चों को भी पाठ-1 के बारे में समझाते हुए पढ़ाया और अभ्यास-कार्य करने को कहा जिनसे मैं पहले नहीं जुड़ पाया था। मैंने उन्हें अपने अभिभावकों की मदद से स्वयं अभ्यास-कार्य पूर्ण करने का प्रयास करने को कहा। यह भी कहा कि यदि कोई दिक़्क़त हो तो मुझे कॉल कर लें। तो अब मैं कक्षा चौथी के सभी

बच्चों के साथ संवाद कर रहा था। पन्द्रह बच्चे शुरुआत से ही नियमित रूप से मेरी कॉल रिसीव कर रहे थे। इससे साबित होता है कि वे अपनी पढ़ाई में रुचि ले रहे थे। हालाँकि जिन बच्चों और अभिभावकों से नियमित सम्पर्क नहीं होता था, उन्हें कान्फ्रेंस कॉल का महत्त्व समझाना भी एक चुनौती था।

कभी-कभी कॉल पर जुड़ना इतना मुश्किल होता कि केवल पाँच बच्चों से जुड़ने में ही पूरा दिन निकल जाता था। कभी-कभी मैं केवल चार बच्चों से जुड़ पाता था, तो कभी-कभी केवल एक बच्चे से। लेकिन मैंने निरन्तरता बनाए रखने की कोशिश की और आगे बढ़ता रहा। यह निर्धारित किया कि प्रतिदिन पाँच बच्चों के साथ एक विषय पर बात की जाएगी। निर्धारित समय और दिन में सम्पर्क नहीं होने पर किसी अन्य दिन और समय पर वह कार्य किया गया। इस प्रकार मैं एक सप्ताह के भीतर कक्षा के सभी तीस बच्चों से सम्पर्क कर पाया।

वैसे तो सभी बच्चे आस-पास बसे नौ गाँवों में ही रहते हैं। पर कुछ बच्चे इस दौरान दूसरे गाँवों में अपने नानी-नाना के घर चले गए थे। मौसम ख़राब हो जाने और लगातार नेटवर्क व्यस्त रहने के कारण सम्पर्क करने में समस्या बनी रही। पर शिक्षक होने के नाते हम महामारी और सम्पूर्ण लॉकडाउन के बावजूद भी अपने बच्चों को शिक्षा प्रदान करने की निरन्तर कोशिश करते रहे। और हम रुकते भी क्यों? हमें तो अपने विद्यार्थियों से बहुत लगाव है। उदाहरण के लिए एक दिन जब हम ग्राम डोंड़की के पाँच बच्चों से सम्पर्क नहीं कर पाए तो हमें उसी गाँव में रहने वाले एक परिचित की मदद लेनी पड़ी। सभी बच्चों तक पहुँचने के लिए पूरे सप्ताह प्रतिदिन औसतन पाँच से छह घण्टे कठिन परिश्रम चलता रहा। इसके अलावा हमें कक्षा की पाठ-योजना भी तैयार करनी होती थी।

हमारे लिए तो लॉकडाउन की स्थिति में बच्चों से जुड़े रहना ही बहुत बड़ी बात थी। अधिकांश अभिभावकों से हमें बहुत ज़्यादा सहयोग मिला। उदाहरण के लिए जब हम दो बच्चों से कुछ दिनों तक मोबाइल से सम्पर्क नहीं कर पाए तो दसवीं कक्षा के दो बड़े बच्चों ने हमारी मदद की। लेकिन एक अन्य उदाहरण में पूरे तीन सप्ताह तक एक बच्ची से सम्पर्क करने के सभी प्रयास असफल होते रहे। उसके अभिभावक से भी कोई सहयोग नहीं मिल पा रहा था। फिर भी हमारा प्रयास जारी रहा और अन्तत: इस बच्ची से कान्फ्रेंस कॉल के माध्यम से सम्पर्क हो पाया।

हमने पाठ-3 'पानी रे पानी' की कविता पढ़ी। प्रत्येक पंक्ति को मित्रता, खेल के नियमों के महत्त्व, स्थानों के महत्त्व, सच और झूठ जैसे मूल्यों और विशेषताओं के सन्दर्भ में समझा गया। इस पाठ के अर्थ को बच्चों के खेल से जोड़कर बताया गया। पाठ पर हुई चर्चा को अख़बार में छपी एक ख़बर और वर्षा जल संग्रहण (rainwater harvesting) के बारे में बातचीत के ज़रिए आगे बढ़ाया गया। जब मैं पाठ को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ रहा था तो बच्चे भी मेरे साथ पढ़ रहे थे। पढ़ने के बाद पाठ को कहानी बनाकर सुनाया गया था। कहानी में स्थानीय स्तर पर पानी की समस्याओं और पानी बचाने के तरीक़ों को भी शामिल किया गया था। पाठ में छत वाले घर का एक चित्र है। इसमें बारिश के दिनों में छत में एकत्र किया गया पानी पाइप द्वारा नीचे एक गड्ढे में एकत्र हो रहा होता है। बच्चों से इस चित्र को एक मिनट तक देखने के लिए कहा गया। फिर प्रत्येक बच्चे से उस चित्र पर आधारित कहानी बनाने को कहा गया। इस बीच बच्चों के साथ कुछ इस तरह के सवाल-जवाब हुए :

- आपके गाँव में पानी बचाने के क्या-क्या उपाय किए जाते हैं?
- आप अपने घर में पानी बचाने के क्या-क्या उपाय कर सकते हैं?
- हमारे स्कूल में पानी बचाने के क्या-क्या उपाय किए गए हैं?
- बारिश के पानी को एकत्र करके क्या-क्या किया जा सकता है?
- ज़मीन में चले गए पानी को हम कैसे उपयोग कर सकते हैं?

लॉकडाउन के दौरान अधिकांश बच्चों से मैं नियमित रूप से जुड़ पाया। परन्तु अभिभावकों के काम में ज़्यादा व्यस्त रहने के कारण बहुत दिक़्क़तें हुईं। मैं कक्षा चौथी के बच्चे लोकेन्द्र को पढ़ाने के लिए कॉल करता था। परन्तु लॉकडाउन के ख़त्म होने पर लोकेन्द्र अपने माता-पिता के साथ काम पर जाने लगा। उसके माता-पिता खेतिहर मज़दूर हैं। उसने बताया कि घर की आर्थिक स्थिति में सहयोग करने के लिए वह मज़दूरी पर जा रहा है और शाम को आता है। इस कारण उसके लिए अपनी पढ़ाई को जारी रखना मुश्किल था। इसके अलावा उसके इधर नेटवर्क की भी बहुत समस्या रहती है। फिर भी कान्फ्रेंस कॉल के दौरान एक दिन शाम सात बजे से आठ बजे तक उसने अपने माता-पिता के साथ दूसरे घर की छत पर जाकर, टॉर्च की रोशनी में पूरे उत्साह से मन लगाकर पढ़ाई की। इस स्थिति की जानकारी मुझे उस सत्र की पढ़ाई पूरी होने के बाद मिली। यह सुनकर मैं स्तब्ध रह गया था।

ऐसे अनेक अनुभव हुए हैं। सभी बच्चे मेरी कक्षा में उत्साह से भाग लेते रहे हैं। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में चुनौतियों के साथ आगे बढ़ने में बहुत मज़ा आया।



अनिल कुमार पटेल, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़ में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा और खेल के शिक्षक हैं। उन्होंने शिक्षा में डिप्लोमा और शारीरिक शिक्षा में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। इसके पहले वे नेहरू युवा केन्द्र संगठन (युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय, भारत सरकार), राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय युवा कोर के ब्लॉक कोऑर्डिनेटर थे। उनसे **anil.patel@azimpremjifounation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।